□□□□ □□□□

नई दल्लिी□ उत्तर प्रदेश में नजिी चीनी मलि मालकिों की हठधर्मिता से गन्ना कसिान बेहद परेशान हैं□ राज्य सरकार से कसिानों को मदद की उम्मीद नजर नहीं आ रही□ दखिावे के लि□ ही सही पर राज्य सरकार ने नजिी चीनी मलि मालकिों को धमकी दी है कि उन्होंने अगले हफ्ते से गन्ने की पेराई शुरू नहीं की, तो सरकार उनसे कि□ाई से नपिटेगी□ मगर ज्यादातर गन्ना कसिान इसे अखलिेश सरकार का ढोंग बता रहे हैं□ हताश कसिान अब मायावती का गुणगान कर रहे हैं□ जनिके राज में न केवल कसिानों को गन्ने का उचति दाम मलिा था बल्कि मलिों ने गन्ने की पेराई भी दीपावली के आसपास शुरू कर दी थी□

उत्तर प्रदेश में गन्ने की खेती कसिानों की आमदनी का ब□ा जरयिा है□ लेकनि जब से राज्य में अखलिेश यादव की सरकार बनी है, नजिी क्षेत्र के चीनी मलि मालकि बेखौफ हो ग□ हैं□ समाजवादी पार्टी ने अपने चुनाव घोषणा पत्र में कसिानों को गन्ने का लाभकारी मूल्य दलिाने का वादा कयिा था□ पछिले साल सरकार ने गन्ने के दाम में 20 रुप□ क्वंटिल की ब□ोतरी भी कर दी थी पर चीनी मलिों ने कसिानों को पछिले सीजन के गन्ने का अभी तक भुगतान ही नहीं कयिा□ नतीजन पछिले साल का 25 अरब रुप□ अभी बकाया हैं□

समाजवादी पार्टी के प्रवक्ता राजेंद्र चौधरी ने शुक्रवार को सरकार की तरफ से चीनी मलि मालकिों को चेतावनी दी□ मगर मलि मालकि टस से मस होने को तैयार नहीं हैं□ उनके दबाव में राज्य सरकार ने इस साल गन्ने के दाम में कोई ब□ोतरी नहीं की□ मलि मालकि अभी भी जदि पकी□ हैं□ वे केंद्र और राज्य दोनों सरकारों से वशिेष आर्थकि पैकेज की मांग कर रहे हैं□ अपनी मांग पूरी न होने तक मलिों में पेराई शुरू नहीं करने का □ालान भी कर चुके हैं□ इस चक्कर में सूबे के 60 लाख गन्ना कसिानों में असंतोष भ□ कर रहा है□ जगह-जगह कसिान धरने, प्रदर्शन और मलिों के बाहर तो□-फो□ कर रहे हैं लेकनि राज्य सरकार मौन है□

दरअसल, कसिानों की परेशानी की वजह दूसरी है□ उन्हें गन्ना मलिों को बेच कर अपने खेत खाली करने की जल्दी है□ मक्सद गेहूं की बुआई करना है□ बुआई में देरी होने से न केवल पूरा फसल चक्र ग□ ब□ा जा□ गा बल्कि गेहूं की पछेती फसल के कारण पैदावार भी घटेगी□ जसिसे देश में अनाज का संकट पैदा हो सक्ता है□ आम तौर पर चीनी मलिें दशहरे से लेकर दीपावली तक गन्ने की पेराई जरूर शुरू कर देती हैं□ इससे कसिान दसिंबर में खेतों को तैयार कर गेहूं की बुआई कर लेते हैं□ मगर इस बार मलिें नहीं चलने से उन्हें मजबूरी में आधे दाम पर अपने गन्ने को गु□ बनाने वाले कोल्हू मालकिों के हाथों बेचना प□ रहा है□ कई जगह तो गन्ना कसिान आर्थकि तंगी के चलते खुदकुशी या फरि इसकी कोशशि भी कर चुके हैं□

कसिानों का कहना है कि मुलायम सहि यादव खुद को धरतीपुत्र और कसिानों का हतैषी बताते रहे हैं□ जबकि मायावती ने ऐसा दावा कभी नहीं कयिा□ तो भी गन्ना कसिानों के लि□ मायावती का राज बेहतर था□ मायावती के खौफ के कारण चीनी मलि मालकि कसिानों का गन्ना तो समय पर खरीद ही रहे थे, उनके भुगतान में भी देरी नहीं कर रहे थे□ इसके उलट अखलिेश यादव जगह-जगह कसिानों को चीनी मलि मालकिों की समस्याओं का वास्ता देकर चुप रहने की सलाह दे रहे हैं□ लगता है कि वे कसिानों के बजाय मलि मालकिों के हमदर्द बन ग□ हैं□

यह सही है कि पिछले कुछ महीनों से चीनी की घरेलू कीमतें नीचे रही हैं जिससे मिल मालिक घाटा होने का रोना रो रहे हैं पर पेराई में देरी करना कहीं न कहीं सरकार की काहिली और मिलीभगत का ही नतीजा लगता है□